SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षार्थियो का प्रशिक्षण के प्रति अभिवृति : एक अध्ययन

अनिता सिंह, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
अनिता सिंह, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/06/2022
Revised on : -----
Accepted on : 28/06/2022
Plagiarism : 05% on 21/06/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 5%

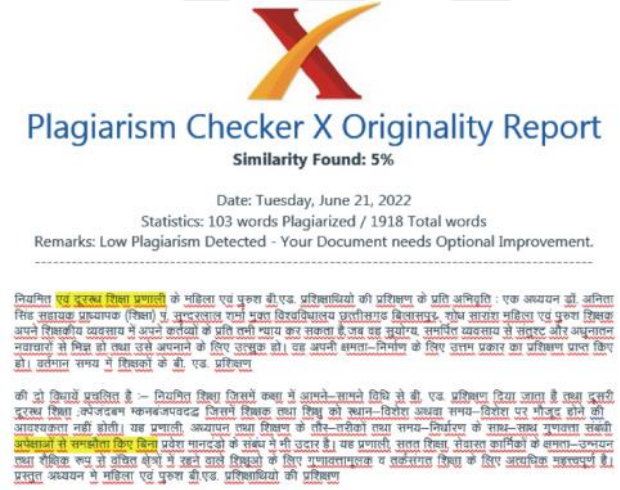

Date: Tuesday, June 21, 2022
Statistics: 103 words Plagiarized / 1918 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महिला एवं पुरुश बी.एड. प्रशिक्षार्थियो की प्रशिक्षण के प्रति अभिवृति : एक अध्ययन डॉ. अनिता सिंह सहायक प्राध्यापक (शिक्षा) पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविधालय छत्तीसगढ बिलासपुर, शोध सारांश महिला एवं पुरुश शिक्षक अपने शिक्षकीय व्यवसाय में अपने कर्तव्यों के प्रति तभी न्याय कर सकता है,जब वह सुयोग्य, समर्पित व्यवसाय से संतुश्ट और अधुनातन नवाचारों से भिज्ञ हो तथा उसे अपनाने के लिए उत्सुक हो। वह अपनी क्षमता–निर्माण के लिए उत्तम प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त किए हो। वर्तमान समय में शिक्षकों के बी. एड. प्रशिक्षण

की दो विधायें प्रचलित है :– नियमित शिक्षा जिसमें कक्षा में आमने–सामने विधि से बी. एड. प्रशिक्षण दिया जाता है तथा दूसरी दूरस्थ शिक्षा ;क्पेजंदबम म्कनबंजपवदद्ध जिसमें शिक्षक तथा शिशु को स्थान–विशेश अथवा समय–विशेश पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रणाली, अध्यापन तथा शिक्षण के तौर–तरीकों तथा समय–निर्धारण के साथ–साथ गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं से समझौता किए बिना प्रवेश मानदंडो के संबंध मे भी उदार है। यह प्रणाली, सतत शिक्षा, सेवारत कार्मिकों के क्षमता–उन्नयन तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षुओ के लिए गुणावत्तामूलक व तर्कसंगत शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन मे महिला एवं पुरुश बी.एड. प्रशिक्षार्थियो की प्रशिक्षण

शोध सार

महिला एवं पुरुष शिक्षक अपने शिक्षकीय व्यवसाय में अपने कर्तव्यों के प्रति तभी न्याय कर सकता है,जब वह सुयोग्य, समर्पित व्यवसाय से संतुष्ट और अधुनातन नवाचारों से भिज्ञ हो तथा उसे अपनाने के लिए उत्सुक हो। वह अपनी क्षमता–निर्माण के लिए उत्तम प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त किए हो। वर्तमान समय में शिक्षकों के बी. एड. प्रशिक्षण की दो विधायें प्रचलित हैः नियमित शिक्षा जिसमें कक्षा में आमने–सामने विधि से बी. एड. प्रशिक्षण दिया जाता है तथा दूसरी दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) जिसमें शिक्षक तथा शिशु को स्थान–विशेष अथवा समय–विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रणाली, अध्यापन तथा शिक्षण के तौर–तरीकों तथा समय–निर्धारण के साथ–साथ गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं से समझौता किए बिना प्रवेश मानदंडो के संबंध मे भी उदार है। यह प्रणाली, सतत शिक्षा, सेवारत कार्मिकों के क्षमता–उन्नयन तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षुओ के लिए गुणावत्तामूलक व तर्कसंगत शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन मे महिला एवं पुरुष बी.एड. प्रशिक्षाथियो की प्रशिक्षण के प्रति उस अभिवृति का अध्ययन किया गया है जिनके द्वारा किसी संस्था, वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति व्यक्ति व्यवहार का निर्णय लिया जाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) नयी दिल्ली के मानदण्ड एवं मानक अधिनियम, 2014 द्वारा बी. एड. प्रशिक्षण में समय–समय पर किये गए संशोधनों ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर इस तरह के अनुसंधान करने को प्रोत्साहित किया है।

मुख्य शब्द

अधुनातन, क्षमता–उन्नयन, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्.

प्रस्तावना

शिक्षा की महत्ता को सार्थक बनाने के लिए समर्पित व सुप्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित है कि किसी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक दृष्टिकोण का पता उसके शिक्षकों से लगता है। शिक्षकों की गुणवत्ता उनके विशिष्ट प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। भारत के वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शालेय शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं विश्वविद्यालयीन शिक्षा –सभी स्तरों की शिक्षा में गिरते गुणात्मक स्तर की व्यापक चर्चा है। इनसे अकादमिक शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा के इच्छुक भारत की विशाल जनसंख्या जिसमें युवाओं की संख्या सर्वाधिक है, उनकी शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति उच्च शिक्षा के माध्यम से संभव नही हो पा रही है।

दूरस्थ शिक्षा

दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की एक नवीन संकल्पना है। यह देश के दूर देहाती क्षेत्रों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्तियों को शिक्षा का सुलभ अवसर प्रदान करने का सबसे बेहत्तर विकल्प है। यह बहुआयामी एवं आधुनिक संकल्पना, वैज्ञानिक तकनीकी, उद्देश्यपूर्णता, एवं मानवीय कार्यो के प्रति समर्पित अवधारणाओं में से एक है, जिसके माध्यम से शिक्षा के प्रत्येक स्तर विशेषकर उच्च शिक्षा प्रभावित हुई है एवं इसके द्वारा ''शिक्षा आपके द्वार'' की धारणा शिक्षा ने पूरी की है। दूरस्थ शिक्षा की सबसे बड़ी प्रमुखता है स्वाध्याय। व्यक्ति में जब स्वयं अध्ययन की प्रवृत्ति हो जाती है तब वह नवीन विचारों व कार्यो का सृजन करती है, वह आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी बनने लगता है। समाज को नई दिशा व चिंतन प्रदान करने मे सक्षम हो जाता है। यह प्रणाली, सतत् शिक्षा, सेवारत कार्मिकों के क्षमता–उन्नयन तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षुओ के लिए गुणावत्तामूलक व तर्कसंगत शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति किसी एक प्राणी की किसी एक विषय–वस्तु एवं व्यक्तित्व के प्रति एक विशेश अर्जित अनुभवबद्ध तथा स्थिरीकरण संवेगात्मक प्रवृत्ति होती है। अभिवृत्ति से हमारा तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जो किसी व्यक्ति, वस्तु संस्था अथवा स्थिति के प्रति किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को इंगित करता है।

अध्ययन का औचित्य

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा आज सर्वसुलभ व लोकप्रिय होने के साथ ही बहुआयामी हो गयी है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) नयी दिल्ली के मानदण्ड एवं मानक अधिनियम, 2014 द्वारा बी. एड. प्रशिक्षण में समय–समय पर किये गए संशोधनों ने इसमें अनुसंधान करने को प्रोत्साहित किया है। यह एक उत्साहपूर्ण पहल है। 2000 से 2016 की अवधि में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर कई अनुसंधान एवं निष्कर्ष प्राप्त हुए है। 29 एवं 27 मई 2011 में तमिलनाडु में आयोजित अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन एवं सन् 2012 में DEC की पहल पर उ. प्र. राजर्षि टण्डन (मुक्त) विश्वविद्यालय, इलाहाबाद में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में अनेको शोध–पत्र पढ़े गए है और अनुभवी विद्वानों के विचार प्राप्त हुए है, इनके निष्कर्षों एवं सुझावों की विवेचना करने पर उनमें विभिन्न प्रकार के विरोधाभाषी निष्कर्ष, रिक्तता और अपर्याप्तता, उजागर हुए हैं और उनके कारण दूरस्थ शिक्षा एवं नियमित शिक्षा का अध्ययन, आज शैक्षिक शोध का बहुचर्चित विशय हो गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं:

1. नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में महिला एवं पुरूष बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

उपरोक्त अध्ययन के उद्देश्यों के परीक्षण हेतु निम्नांकित शून्य परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है:

H_{01} नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा

- नियमित शिक्षण के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थी का अभिप्राय उन बी.एड. प्रशिक्षार्थियों से है जो छत्तीसगढ़ राज्य के शासकीय/अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में नियमित कक्षा शिक्षण विधि (Face to Face) में बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण ले रहे हैं। ये प्रशिक्षार्थी राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (मानदण्ड तथा मानक) अधिनियम, 2014 के प्रावधानों के अधीन बी.एड. प्रशिक्षण ले रहे हैं।
- दूरस्थ शिक्षा के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों से तात्पर्य उन बी.एड. प्रशिक्षार्थियों से है जो पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ बिलासपुर के 10 अध्ययन केन्द्रों से जुड़े रहकर बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण ले रहे है। इनका प्रशिक्षण भी एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के प्रावधानानुसार हो रहा हैं।
- अभिवृत्ति से तात्पर्य है: अभिवृत्ति को मापन योग्य स्थिति में रखकर यह उत्तरदाता के उस कुल प्राप्तांक से प्रदर्शित होगी जो वह डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित टीचर एटीट्युट इन्वेण्टरी (TAI) के प्रशासन में प्राप्त करेगा।

संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा

मायाशंकर एवं सिंह (2004) 'नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी. एड.प्रशिक्षार्थियों की अभिवृति एवं समस्यायें' को तुलनात्मक अध्ययन कर अपने शोध निष्कर्ष निम्नानुसार प्राप्त किये है–दोनों प्रणालियों के प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर है जो दूरस्थ शिक्षा के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों के पक्ष में हैं। इन दोनों महानुभावों ने उक्त अध्ययन के आधार पर रोचक निष्कर्ष निकाले है कि नियमित शिक्षा के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति की तुलना में दूरस्थ शिक्षा के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति कम सकारात्मक रही हैं और समस्याओं की दृष्टि से भी वे अधिक समस्याग्रस्त है। ये निष्कर्ष आगे अधिक गहन शोध अध्ययन करने की प्रेरणा देते है।

चौहान एवं सान्याल (2004) ''मुक्त विश्वविद्यालय के संबंध में समाज के सदस्यों की जानकारी तथा दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन'' में निष्कर्ष निकाला है कि:

1. शोध के स्तर पर मुक्त विष्वविद्यालय के विभिन्न आयामों की तुलना परंपरागत शिक्षा संस्थाओं से अवश्य की जानी चाहिए।
2. संपर्क कार्यक्रमों को संचालित करने वाले सदस्यों को वर्कशाप के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाना उचित होगा, तभी निपुणता और पारंपरिक कक्षा–शिक्षा के प्रति श्रेष्ठता का आभास, समाप्त होगा।

Khan & Chandra, to investigate the attitude of B. Ed. Teacher trainees trough regular and distance (IGNOU) mode towards the teaching profession. This study indicates that there is a No significance difference found between Attitude of the male and the female B. Ed. Trainee towards the teaching profession. It shows that there is no difference between the attitudes of male teacher trainees towards the teaching profession than the Female teacher tranees at B. Ed. level.

Smitaben (2018), "A Study of Attitudes of the B.Ed. Trainees towards Teaching Profession". This study clearly indicates about the attitudes of student-teachers toward teaching profession. Attitudes of girls and boys are common. Granted and Non-Granted B. Ed. Trainees attitudes are more common.

अध्ययन की शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन की शोध प्रविधि के रुप मे वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में दोनों शिक्षा प्रणालियों के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन किया गया है, उसके लिये जनसंख्या सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत 10 अध्ययन केन्द्रों के बी.एड. प्रशिक्षार्थी एवं नियमित पारम्परिक ढंग से प्रशिक्षणरत शासकीय/अशासकीय प्रशिक्षार्थी होंगे।

न्यादर्श

वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य में कुल लगभग 138 स्ववित्तपोषी शिक्षा महाविद्यालयों तथा दो शासकीय, शिक्षा महाविद्यालयों में परम्परागत नियमित बी.एड. प्रशिक्षण संचालित हो रहा है। इनमें से नियमित से कुल पांच शिक्षा महाविद्यालयों का चयन किया गया और इन पांच महाविद्यालयों से यादृच्छिक विधि से बी.एड. प्रथम वर्ष के 25 तथा द्वितीय वर्ष के 25 प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है। इसी प्रकार दूरस्थ शिक्षा के दस केन्द्रो मे से पांच अध्ययन केन्द्रो का चयन कर यादृच्छिक रीति से प्रत्येक के प्रथम वर्ष के 25 तथा द्वितीय वर्ष के 25 प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है। चयनित न्यादर्श का स्वरूप निम्नानुसार चार्ट में दिया गया है:

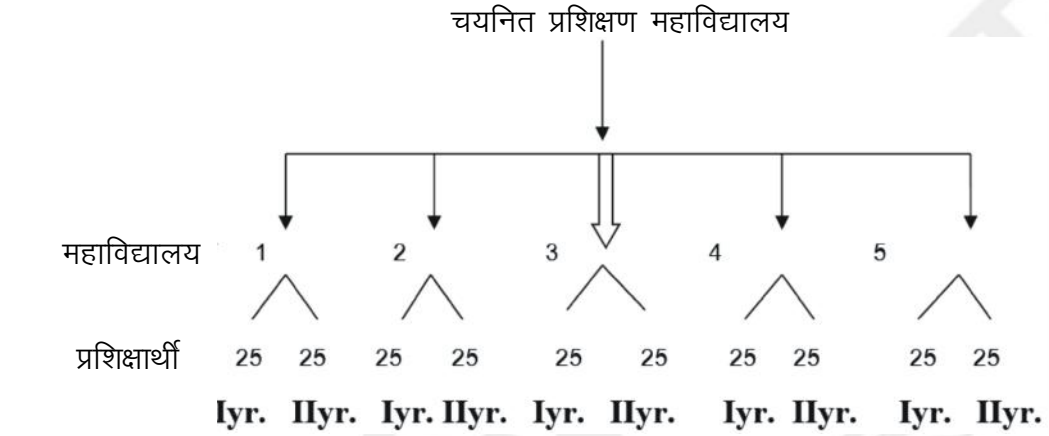

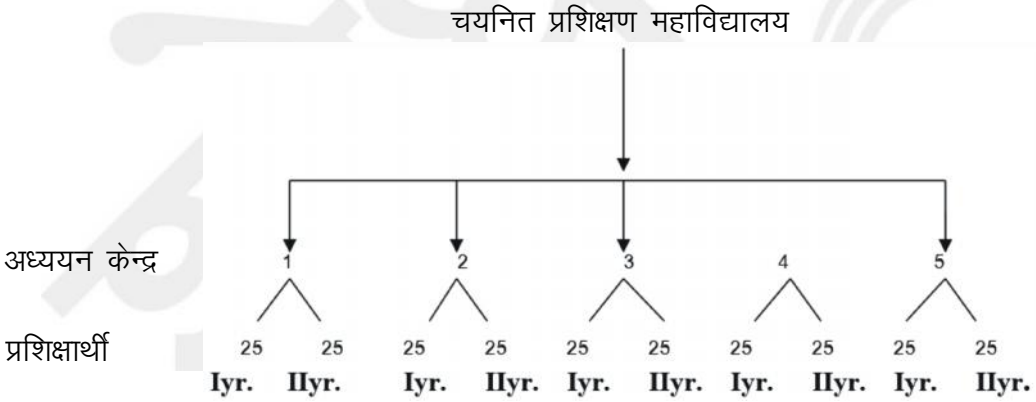

इस प्रकार न्यादर्श में कुल 250 प्रशिक्षार्थी सम्मिलित हुए है।

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 500 प्रशिक्षार्थियों को न्यादर्श मे शामिल किया गया है।

चरांक

अध्ययन में सम्मिलित चरांक निम्नानुसार हैं:

01. **स्वतंत्र चरः** प्रशिक्षण का प्रकार

02. **साहचर्यित स्वतंत्र चरः**

(1) लिंग – महिला एवं पुरुष

(2) प्रशिक्षण वर्ष – प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष

03. **आश्रित चरः** प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में दोनों प्रणालियों के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति के मापन हेतु डॉ. एस. पी. अहलुवालिया, भूतपूर्व प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय सागर (म.प्र.) द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापनी (हिन्दी माध्यम) का उपयोग किया गया।

प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति संबंधी परिकल्पना का विश्लेषण

H_{01} नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियो के प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु ANOVA परीक्षण की गणना निम्नांकित सारणी के अनुसार प्राप्त हुई है:

Test of Homogeneity of Variance

DV		Levene's test	df1	df2	Sig.
Attitude	Based on Mean	2.001	3	496	0.113

Gender * Mode

Dependent Variable : Attitude

Gender	Mode	Mean	SD	Std. Error	95 % Confidence Interval		N
					Lower Bound	Upper Bound	
Male	Regular	220.810	33.713	8.037	205.019	236.600	125
	Distance	236.229	38.576	2.541	231.235	241.222	125
	Total	**234.83**	**38.351**				250
Female	Regular	229.949	31.932	4.144	221.808	238.090	125
	Distance	239.589	37.052	2.672	234.340	244.839	125
	Total	**236.76**	**35.837**				250

Univariate Tests

Dependent Variable : Attitude

	Sum of Squares	Df	Mean Square	F	Sig.
Contrast	8932.295	1	8932.295	6.586	0.05
Error	672750.043	496	1356.351		

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि प्राप्त मान नियमित शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षार्थियो के पुरूषो (Mean = 220.81, SD = 33.71) तथा महिलाओं (Mean = 229.94, SD= 31.93) इसी प्रकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों के पुरूषों (Mean = 236.22, SD = 38.57) तथा महिलाओं (Mean = 239.58, SD = 37.05) प्राप्त हुआ है जो F1, 496 = 6.586, $p < 0.05$ सार्थकता के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर को दर्शाता है, अतः परिकल्पना क्रमांक 01 अस्वीकृत होती है।

अतः परीक्षण इस ओर संकेत करता है कि नियमित व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महिला व पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियो के प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष

परीक्षण इस ओर संकेत करता है कि नियमित व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महिला व पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियो के प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। इसी तरह का निष्कर्ष मायाशंकर एवं सिंह (2004) ने अपने शोध निष्कर्ष मे प्राप्त किये है–दोनों प्रणालियों के प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर है जो दूरस्थ शिक्षा के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों के पक्ष में हैं। इन दोनों महानुभावों ने उक्त अध्ययन के आधार पर रोचक निष्कर्ष निकाले है कि नियमित शिक्षा के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति की तुलना में दूरस्थ शिक्षा के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति कम सकारात्मक रही हैं। ये निष्कर्ष आगे अधिक गहन शोध अध्ययन करने की प्रेरणा देते है।

सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से महिला व पुरूष बी.एड.प्रशिक्षार्थियों द्वारा अनुभूत समस्याओं की जानकारी व निवारण हो सकेगा एवं शिक्षको, प्रशासको द्वारा समुचित कदम उठाये जा सकेंगे।
2. प्रस्तुत अध्ययन शोधार्थियों, शिक्षाविदो एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओ के संचालको और प्रशासको के लिए उपयोगी सिद्व होगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन में महिला व पुरूष बी.एड. नियमित व दूरस्थ प्रशिक्षार्थियों के मत से दो वर्षीय बी.एड. पाठयक्रम के विभिन्न आयामो को धीरे–धीरे स्वीकार करने की स्थिति मे दिखाई दे रहे है। आगामी वर्षो मे यह द्विवर्षीय पाठयक्रम सफल शिक्षको को तैयार करने मे सफल होंगे।

संदर्भ सूची

1. Anand, S, (1979) : University without Walls, New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
2. Bahuguna, R.C. (1988) : A Comparative Study of Correspondence and Formal Eduction, *Journal of Educational Planning and Administration*, Vol.2 No.3 and 4.
3. Bhatnagar, S. (1997) Distance Educational : A System Under Stress, (An Indepth Study of Institute Institute of Correspondence Course), New Delhi, Concept Publishing Company.
4. Dubey, Viredra Kumar (2012) : ''दूरस्थ षिक्षा में नवाचार'', Amelioration in Distance Education Education, UPRTOU Publication, DEC, New Delhi, P 155-157.
5. Gupta, Dinesh Kumar and Arun Kumar Singh (2012) ''परम्परागत विश्वविद्यालय एवं मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे कला वर्ग के छात्रों का उच्चशिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन'', Amelioration in Distance Education, UPRTOU Publication, DEC, New Delhi, PP. 207-213

6. Edwards, Allens (1957) Techniques of Attidute Scale Construction, New York, Appleton-Century Crofts, Inc. P.2.
7. Khan, Moheeta (2017): Implementation of Two Year B.Ed Program: Issue and Concerns. http:www.researchgate.net/publication/329714694, Aligarh Muslim University.Pp202.
8. Lakshmana, P. YellaReddi and Nagarjuna, T.I. (2011) : "A Study of Attitude of B.Ed., Student (Distance Mode) towards Value Oriented Education", International Conference on QualitEnhanment in Distance Education for Life Long Learing, 26th – 27th March, 2011, Bharathidarsan University Publication, Tiruchirapplli Tamil Nadu (India) PP. 158-160.
9. Pandey, S.K. (1980) : "Economics of Correspondence Education in Indian Universities" Meeruti University", in Four Decades of Distance Education in India. Viva Books New Delhi Pvt., P.457.

****